B.A. Part I
Hindi Hons
सूर की भक्ति

6/11/20

(1)

डॉ० [illegible] कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी विभाग

"हरिलीला उपकार पार सादर मति मारी।
सतगुरु कृपा प्रकाश सहूक आँखें भरि वारी॥"

रास प्रसंग में भी कवि ने गुरु के महत्त्व को स्वीकार किया है और जब ठाकुर को कृष्ण ने अपने लौकिक रूप के दर्शन कराए हैं, उस समय भी कवि ने गुरु का महत्त्व स्वीकार किया है। इस प्रकार सूर ने गुरु सेवा और संत सेवा का जो पुष्टिमार्गीय सेवा के महत्त्वपूर्ण अंग हैं, विवेचन किया है। जहाँ तक प्रभु सेवा का प्रश्न है, उसके दोनों ही रूप अर्थात नाम स्मरण और रूप सेवा में मिल जाते हैं। स्वरूप सेवा के भी क्रियात्मक और भावात्मक दोनों रूप सागर में पाये जाते हैं। वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित होने के अनन्तर सूरदास जी निरन्तर रूप से गोवर्द्धन पर श्रीनाथ जी के मन्दिर में कीर्तन करते रहे। इसलिए पुष्टिमार्गीय सेवा का जितना विकसित रूप हमें सूर में मिलता है, उतना अन्यत्र दुर्लभ है। आत्मनिवेदन और शरणागति भी पुष्टिमार्ग का क्रियात्मक रूप है। नित्य सेवा और वर्षोत्सव विधि का बड़ा महत्त्व है। नित्य सेवा विधि प्रातःकाल से शयन पर्यन्त तक की जाती है, जिसके आठ समय होते हैं। आजकल जितने कीर्तन प्राप्त होते हैं वे सब संग्रहात्मक रूप में मिलते हैं, जिसमें अष्टछाप के कवियों के कीर्तन पदों का संग्रह आठों झाँकियों के क्रम से दिया है। सूरसागर का संग्रहात्मक संस्करण भी प्रायः उसी क्रम पर है। सूरदास का एक सेवा क्रम का पद भावात्मक और क्रियात्मक दोनों ही सेवाओं का केन्द्र है। साथ ही क्रियात्मक सेवा को मानसिक सेवा का ही साधन माना है तथा मानसिक सेवा का फल मानसिक सेवा ही है। नित्य सेवा में मंगल आरती के अनन्तर भगवान के स्वरूप को उष्ण जल से स्नान कराया जाता है और फिर तैलादि लगाकर वस्त्र आभरण आदि से स्वरूप को सुसज्जित किया जाता है, जिसके अनन्तर शृंगार भोग होता है आदि आदि।

वर्षोत्सव विधि पर सूर के अनेक पद हैं। सूरसागर में राम, नृसिंह और वामन जयन्तियों का पूरा-पूरा वर्णन है। पुष्टिमार्गीय सेवा के तीन अंग हैं - भोग, राग और शृंगार। भोग का अभिप्राय है - खान पान आदि के उत्तम-उत्तम पदार्थ

क्रमशः —